मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

बुटाना कांड में कई सनसनीखेज खुलासे मजदूर मोर्चा टीम पहुंची बुटाना

पेज 8 पर

वर्ष 33 | अंक 49 | फरीदाबाद | 18-24 अक्टूबर 2020 | फोन-8851091460 | ₹3.00

नेहरू कॉलेज में प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठा नाकारा 'गुरू' रावत

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 16 ए स्थित नेहरू राजकीय महाविद्यालय हरियाणा के सबसे पुराने व बड़े कॉलेजों में से एक है। बीते सप्ताह ही इसकी 50 वीं वर्षगांठ मनाई गयी थी। लेकिन बीते काफ़ी समय से यहां प्रिंसिपल का पद रिक्त पड़ा है। सरकार बाकायदा पदोन्नत करके प्रिंसिपल नियुक्त करने की बजाय किसी वरिष्ठ प्रोफेसर को चार्ज देकर प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठाने की नीति अपनाये हुए है। इसी नीति के तहत जब इसी कॉलेज के दो वरिष्ठ प्रोफेसरों ने प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठने से इन्कार कर दिया तो हर प्रकार से अयोग्य ओम प्रकाश रावत के भागों छींका टूट पड़ा। वह सरपट दौड़ता हुआ चंडीगढ़ पहुंचा और अपने एक मित्र महेश जो डीएचई के सहायक हैं, के सहयोग से गीदड़सींगी लेकर प्रिंसिपल की कुर्सी पर आ बैठा।

अब, जिसकी योग्यता स्कूल मास्टर की भी न हो और उसे बैठा दिया जाये इतने बड़े कॉलेज के सिर पर तो दिमाग तो खराब होना ही था। वैसे इस व्यक्ति का दिमाग से कोई ताल्लुक हो, ऐसा लगता नहीं। बतौर गणित प्रोफ़ेसर नियुक्त इस व्यक्ति का इतिहास खंगालने पर पता चला कि इसने कभी क्लास पढाई ही नहीं। हमेशा दांय-बांय रह कर टेर्कालॉजी ही मारी है और अब प्रिंसिपल की कुर्सी हाथ लगने के बाद तो पढाने का काम वैसे ही खत्म हो गया।

किसी अधिकारी के व्यक्तित्व में जब दम नहीं होता एवं वह भीतर से खोखला होता है तो वह अपने अधीनस्थों को प्रभावित करने अथवा उन पर रौब गांठने के लिये तरह-तरह के ओछे-हथकंडे अपनाता है। ऐसे ही हथकंडे अपनाते हुए रावत ने स्टाफ़ में से कुछ चापलूस पाल रखे हैं, जिन्हें छूट है कि वे जब चाहें कॉलेज आयें, जब चाहें जायें और न भी आयें तो चलेगा। और तो और चपरासी से क्लर्क बनी सुषमा नरूला को तो इतना सिर पर चढ़ा रखा है कि वह उच्च शिक्षित प्रोफेसरों को ऐसे धमकाती है जैसे वे भिखारी हों। हाजरी रजिस्टर को कब्ज़े में लेकर तो वह ऐसे व्यवहार करती है जैसे वही कॉलेज की मालकिन हो। प्रोफ़ेसरों से सम्बन्धित कागजात व डाक आदि के लेन-देन में भी वह अपनी पूरी चौधराहट दिखाती है, उन्हें अपने सामने खड़ा रख कर बात तक नहीं करती। इसके बदले उसने एक जुमला जरूर रट रखा है, चेयर यानी प्रिंसिपल की कुर्सी खुदा होती है। बात-बात पर वह यही जुमला जोर-जोर से चिल्लाती रहती है। तत्कालीन प्रिंसिपल प्रीता कौशिक के कार्यकाल में चण्डीगढ़ से आये डायरेक्टर से जब उन्होंने शिकायत की तो सुषमा नरूला ने बीमारी का नाटक किया।

कॉलेज पर बोझ : **ओम प्रकाश रावत और मीनाक्षी**

अपनी अहमियत दिखाने एवं रौब गांठने के लिये अनपढ़ होते हुए भी वह प्रोफेसरों को कई तरह से तंग करती है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बीते सप्ताह कुछ महिला प्रोफ़ेसरों ने इसकी शिकायत सीएम विंडो तक भी कर दी हैं। शिकायत में कहा गया है कि जिस सरकारी आदेश के द्वारा गर्भवती तथा शिशुओं को स्तनपान कराने वाली प्रोफेसरों तथा विकलांग प्रोफ़ेसरों को घर से ही ऑनलाइन काम करने की छूट दी गयी है, उन्हें यह नकली प्रिंसिपल तंग करती है। इस श्रेणी में 10 महिला व चार पुरुष प्रोफ़ेसर आते हैं। कोरोना महामारी से बचाने के लिये सरकार द्वारा दी गयी इस सुविधा को रावत अपनी मुट्ठी में दबोच कर रखता है जैसे वही इसे देने वाला है। इसके लिये वह घंटों गर्भवती प्रोफ़ेसरों को अपने दरवाज़े पर खड़ा रखता है और खुद चेयर पर बैठा अपने चापलूसों के साथ हंसी ठिठोली करता रहता है। रावत की बंदतमीजी की यह इंतिहा है।

जानकार बताते हैं कि सीएम विंडो पर शिकायत के बाद जांच करने के लिये 10 अक्टूबर को रेणु भाटिया, सदस्य राज्य महिला आयोग प्रिंसिपल कार्यालय में पहुंची। किसी भी सवाल का सामना करने में असमर्थ रावत ने चिल्लाने के लिये अनपढ क्लर्क सुषमा, अपनी एक चापलूस प्रोफ़ेसर रूचिरा खुल्लर को बुला लिया। रावत की पत्नी मीनाक्षी जो हिन्दी की प्रोफ़ेसर हैं, वह तो हमेशा रहती ही अपने प्रिंसिपल पति की बगल में है, प्रिंसिपल की पत्नी होकर भी क्लास पढाई तो क्या फ़ायदा। वैसे इस हिन्दी प्रोफ़ेसर द्वारा क्लास न लिये जाने की भी पिछले वर्ष छात्र शिकायत कर चुके हैं।

जानकारों के अनुसार रेणु भाटिया को जब एक प्रोफ़ेसर ने बताया कि उसके द्वारा ऑन लाइन पढाई गयी क्लासों का पूरा ब्योरा उन्होंने सम्बन्धित बाबू को दे दिया था; बुलाने पर जब बाबू तसदीक करने पहुंचा तो रावत ने उसे सुनने की बजाय किसी अन्य काम के लिये रवाना कर दिया। रेणु भाटिया जब भी कोई बात रावत से पूछती तो वह सुषमा नामक क्लर्क इधर-उधर की बात लेकर रावत की प्रशंसा में चिल्लाने व शिकायतकर्ता को धमकाने लगती। पत्नी मीनाक्षी व अंग्रेजी प्रोफ़ेसर रुचिरा खुल्लर भला क्लर्क को अपने से आगे कैसे जाने देते और जोर-शोर से बातों को घुमाने लगते।

खुल्लर ने तो रावत को पहाड़ पर चढाते हुए यहां तक कह डाला कि यह तो बहुत 'डाउन टू अर्थ' यानी बहुत ही शरीफ़ प्रिंसिपल है जो जब चाहे इनके दफ्तर में घुसे चले आते हैं। अग्रवाल कॉलेज में जाकर देखो, प्रिंसिपल से मिलने के लिये पांच-पांच प्लेटफ़ार्म पास करने पड़ते हैं। कुल मिलाकर रेणु भाटिया के सामने किसी बात को स्पष्ट होने ही नहीं दिया। लेकिन वे भी सुलझी हुई पूरी धुरंधर हैं, प्रिंसिपल चौंकड़ी का सारा खेल बखूबी उनकी समझ में आ गया।

अब देखना यह है कि वे न केवल रावत चौकड़ी द्वारा प्रताड़ित महिला प्रोफ़ेसरों को राहत दिलाने बल्कि शहर के इतने बड़े कॉलेज व इससे जुड़े लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए यहां किसी ढंग के प्रिंसिपल की नियुक्ति के लिये सिफ़ारिश करती हैं या रावत के लग्गुए-भगुओं के दबाव में आकर रावत को संरक्षण दिलाती हैं।

फरीदाबाद का नटवरलाल किशनचंद

फ़रीदाबाद (म.मो.) गरीब मजदूरों की मजबूरी को ढाल बनाकर ब्लैकमेलिंग का धंधा चलाने वाले भविष्य निधि विभाग से रिटायर कर्मी किशनचंद उर्फ केसी चौहान उर्फ किशन चंद कश्यप का भांडा फूट गया है।

एटक ट्रेड यूनियन की यूनिट कारखाना मज़दूर संगठन इंदौर एटक ने इस मामले से पर्दा उठाया है। यूनियन ने पीएफ विभाग के इस नटवरलाल द्वारा उनके नाम से ब्लैकमेलिंग का धंधा चलाने और उनके लेटर हेड का प्रयोग करने का आरोप लगाया है।

सूत्रों के अनुसार किशन चंद पिछले कई वर्ष से कारखाना मज़दूर संगठन इंदौर (एटक) जो कि एटक ट्रेड यूनियन की ही एक यूनिट है, के फर्जी लेटर हेड पर पीएफ दफ्तर फरीदाबाद व केंद्रीय भविष्य निधि आयुक्त दिल्ली को लखानी वरदान ग्रुप की कंपनियों की तरफ 13 करोड़ पीएफ जमा न कराने को लेकर शिकायतें भेज रहा था। इसने कारखाना मज़दूर संगठन इंदौर के फर्जी लेटर हेड पर इस यूनियन के महासचिव मोहन निम्जे के फर्जी हस्ताक्षर करके खुद को इंदौर यूनिट का अधिकृत प्रतिनिधि घोषित किया हुआ था।

ऐसा ही एक पत्र पिछले महीने 11 सितंबर की तारीख डालकर केंद्रीय भविष्य निधि आयुक्त, अपर केंद्रीय भविष्य निधि आयुक्त व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त फरीदाबाद को भेजा था। जिसमें लखानी वरदान ग्रुप की 13 करोड रुपये की पीएफ की रिकवरी के बहाने रिकवरी अधिकारी फरीदाबाद की

रिकवरी की वसूली को लेकर की गई थी। यहां पाठकों को बताते चलें कि लखानी वरदान ग्रुप की कंपनियां लिक्विडेशन में जा चुकी हैं और अब विभाग कोई भी एक्शन नही ले सकता है।

भविष्य निधि विभाग ने इसके द्वारा लिखे गए पत्रों को इंदौर भेजकर उनकी सत्यता की जांच करवाई तो इसके द्वारा लिखे गए पत्रों को कारखाना मज़दूर संगठन इंदौर एटक ने पूरी तरह से फर्जी बताया। मजदूर मोर्चा ने जब इसकी कुंडली खंगाली व इसके द्वारा किये गए फर्जीवाड़े के अनेक मामले सामने आये। वर्तमान प्रकरण में भी इसकी कहानी ब्लैकमेलिंग की कहानी है।

आज से लगभग 10 वर्ष पहले जब लखानी वरदान ग्रुप उसके मालिकों की करतूतों से डूबने लगा था और अपने श्रमिकों की भविष्य निधि राशि को निगल रहा था उस समय भविष्य निधि विभाग ने अपने कार्यालय में 10 सबसे बड़े डिफॉल्टरों की जो सूची टांगी हुई थी उसमें लखानी वरदान ग्रुप का नाम सबसे ऊपर होता था।

उस समय फरीदाबाद कार्यालय में प्रभारी केएल तनेजा ग्रेड 1 तथा विनीत गुप्ता ग्रेड 2 थे। तनेजा व गुप्ता जो भविष्य निधि संगठन के सबसे ईमानदार अधिकारियों में से एक है, ने एक दिन पीडी लखानी को पकडवा कर कार्यालय में बनाई गई अस्थाई जेल में बंद कर दिया था। उस दिन पीडी लखानी ने तुरंत डेढ़ करोड़ की डीडी देकर तथा बकाया को शीघ्र देने का वादा करके जैसे तैसे अपनी जान छुड़ाई थी। लेकिन उसके बाद वह फरार हो गया। फरार होने पर उसके बेटे मयंक ने लखानी वरदान ग्रुप की कमान संभाल ली। लेकिन अनुभव की कमी के चलते वह विभिन्न सरकारी महकमों से डरा हुआ था। इसकी किशन चंद को भनक लग गई और किसी तरह मयंक लखानी के पास पहुंच कर उसे अपने जाल में ऐसा फंसाया कि आज तक उसके गले पड़ा हुआ है। वर्ष 2013-14 के बाद तो यह एक समय लखानी ग्रुप का सबसे ताकतवर आदमी बन गया था। अब वहाँ इसने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया। इसने उस समय लखानी वरदान ग्रुप की भविष्य निधि की रिकवरी पर सीजीआई ट्रिब्यूनल से स्टे लगवा दिया। उस समय इंदौर स्थित लखानी ग्रुप के प्लांट में कंपनी का लाखों का जूते चप्पलों का स्टॉक था।

शेष पेज 5 पर

बरोदा उपचुनाव में खट्टर की 'राजनीति' को अकेले विधायक ने 'ठोंका'

दुष्यंत चौटाला की 'इज्जत' पर जाट विधायक भारी पड़ा

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

चंडीगढ़: हरियाणा में बरोदा उपचुनाव जीतने की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की कोशिशों को अकेले विधायक ने पलीता लगा दिया है। यह विधायक हैं हरियाणा जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के जोगीराम सिहाग। बरवाला से चुने गए इस विधायक को खट्टर ने कल (15 अक्टूबर) ही हरियाणा आवास बोर्ड का चेयरमैन बनाया था। लेकिन सिहाग ने तीन कृषि कानूनों के मुद्दे पर विरोध जताते हुए घोषणा की है कि वो इस पद को स्वीकार नहीं करेंगे। सिहाग वही विधायक हैं जिन्होंने हरियाणा में कृषि विरोधी कानून के खिलाफ आंदोलन शुरू होने पर किसानों के साथ धरने पर भी बैठे थे।

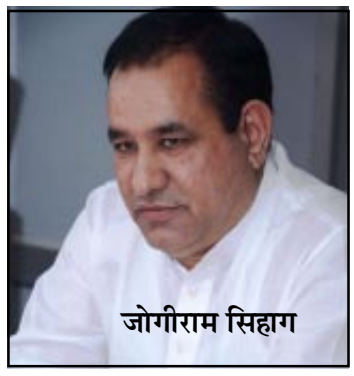

जोगीराम सिहाग

सिहाग का पद लेने से इनकार करना बता रहा है कि दुष्यंत चौटाला की पार्टी जेजेपी में कलह बढ़ गई है। पिछले दो महीने से सिहाग और कुछ अन्य विधायक लगातार दुष्यंत की नीतियों को लेकर नाराजगी जता रहे थे। इन लोगों ने दुष्यंत पर दबाव भी बनाया था कि वो भाजपा से संबंध तोड़कर अलग हो जाएं। नाराज विधायकों का कहना था कि मोदी सरकार के कृषि कानून हरियाणा के किसानों को सीधे-सीधे प्रभावित करेंगे, इसलिए इस उचित मौके पर जेजेपी को अकालियों की तरह भाजपा से पीछा छुड़ा लेना चाहिए।

शेष पेज 5 पर